नमाज़
और नियाज़
वुज़ू का तरीक़ा
गुस्ल का तरीक़ा
नमाज़ का तरीक़ा
फ़ातिहा का तरीक़ा
मुरत्तिब
मौलाना हाफ़िज़ तौहीद अहमद ख़ाँ रज़वी
नाशिर
तहसीनी फ़ाउन्डेशन
बरेली शरीफ़
www.tehseenifoundation.com

नमाज़ और नियाज़

मुरत्तिब

मौलाना हाफ़िज़ तौहीद
अहमद ख़ाँ रज़वी

मुदर्रिस जामिया तहसीनिया ज़िया-उल-उलूम

नाशिर

तहसीनी फ़ाउन्डेशन

**चक महमूद, तहसीनी नगर,
पुराना शहर, बरेली शरीफ़**

www.tehseenifoundation.com

नाम किताब : नमाज़ और नियाज़
मुरत्तिब : मौलाना हाफ़िज़ तौहीद अहमद खाँ रज़वी
नाशिर : तहसीनी फाउन्डेशन, चक महमूद
तहसीनी,नगर,पुराना शहर,
बरेली शरीफ़
सन इशाअ़त: 2014
तादाद : इशाअते अव्वल 1000, इ
क़ीमत : 10 रू

الحمد للّٰه رب العٰلمين وا لصلوٰة والسلام
علىٰ سيد الانبياء والمرسلين
اما بعد فاعوذ باللّٰه من الشيطٰن الرجيم
بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

वुजू का बयान
वुज़ू की फ़ज़ीलत

ह़दीसः ह़ज़रत अबु हुरैरह रदिअल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत इस ह़ालत में बुलाई जायेगी कि मूँह, हाथ और पैर वुजू की वजह से चमकते होंगें। (बुख़ारी)

ह़दीसः ह़ज़रत मौला अ़ली रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो सख्त सर्दी में कामिल वुजु करे उसके लिये दूना सवाब है। (तबरानी)

वुजू के फ़राइज़

वुजू में चार फ़र्ज़ हैं

(1) **मूँह धोनाः** लम्बाई में शुरू पेशानी से यानि बाल उगने की जगह से ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक।

(2) **कोहनियों** समेत दोनों हाथों का धोना।

(3) **चौथाई सर** का मसह करना।

(4) **दोनों पाँव** टखनों समेत धोना।

वुज़ू का तरीक़ा

वुज़ू करने का तरीका यह है कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े फिर मिस्वाक करे अगर मिसवाक न हो तो उंगली से दाँत मल ले, फिर दोनों हाथों को गटटों तक तीन बार धोये पहले दाहिने हाथ पर पानी डाले फिर बायें हाथ पर, दोनों को एक साथ न धोये, फिर दाहिने हाथ से तीन बार कुल्ली करे फिर बायें हाथ की छोटी उंगली से नाक साफ़ करे और दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाये, फिर पूरा चेहरा धोये यानि पेशानी पर बाल उगने की जगह से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर हिस्से पर तीन बार पानी बहाये, इसके बाद दोनो हाथ कोहनियों समेत तीन बार धोये, उंगलियों की तरफ़ से कोहनियों के ऊपर तक पानी डाले कोहनियों की तरफ़ से न डाले, फिर एक बार दोनों हाथ से पूरे सर का मसह करे फिर कानों का और गर्दन का एक एक बार मसह करे, फिर दोनों पाँव टखनों समेत तीन बार धोये।

मसअ़लाः– धोने का मतलब यह है कि जिस चीज़ को धोयें उसके हर हिस्से पर पानी बह जाये।

मसअ़लाः– अगर कुछ हिस्सा भीग गया मगर उस पर पानी बहा नही तो वुज़ू हरगिज़ नही होगा भीगने के साथ हर हिस्से पर पानी बह जाना ज़रूरी है।

वुज़ू की सुन्नतें

वुज़ू में यह चीज़ें सुन्नत हैं. नियत करना, बिस्मिल्लाह से शुरू करना, दोनों हाथों को गटटों तक तीन बार धोना, मिस्वाक करना, दाहिने हाथ से तीन कुल्लियाँ करना, दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना, बायें हाथ से नाक साफ़ करना, दाढ़ी का खिलाल करना, हाथ पाँव की उंगलियों का खिलाल करना, हर उज़्व(हिस्से) को तीन बार धोना, पूरे

सर का एक बार मसह करना, कानों का मसह करना, तरतीब (यानि पहले गटटों तक हाथ धोना फिर कुल्ली करना, फिर नाक में पानी चढ़ाना आदि) से वुज़ू करना, दाढ़ी के जो बाल मूँह के दायरे के नीचे हैं उनका मसह करना, आज़ा को पैदरपै (एक के बाद एक लगातार) धोना, हर मकरूह बात से बचना।

वुज़ू के मकरूहात

वुज़ू में ये बातें मकरूह हैं. औरत के गुस्ल या वुज़ू के बचे हुये पानी से वुज़ू करना, वुज़ू के लिये नजिस (नापाक) जगह बैठना, नजिस जगह वुज़ू का पानी गिराना, मस्जिद के अन्दर वुज़ू करना, वुज़ू के आज़ा से बरतन में पानी के क़तरे टपकाना, क़िबला की तरफ़ थूक या खंखार डालना या कुल्ली करना, बे ज़रूरत दुनिया की बातें करना, ज़रूरत से ज़्यादा पानी खर्च करना, पानी इस क़द्र कम खर्च करना कि सुन्नत अदा न हो, मूँह पर पानी मारना, मूँह पर पानी डालते वक्त फूँकना, सिर्फ एक हाथ से मूँह धोना, गले का मसह करना, बायें हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना, दाहिने हाथ से नाक साफ़ करना, अपने लिये कोई लोटा वग़ैरह ख़ास़ कर लेना, तीन नये पानियों से तीन बार सर का मसह करना, किसी सुन्नत को छोड़ देना।

वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें

पाखाना या पेशाब करना, पाखाना या पेशब के रास्ते से किसी और चीज़ का निकलना, पाखाने के रास्ते से हवा का निकलना, बदन के किसी मक़ाम से खून या पीप का निकल कर ऐसी जगह बहना कि जिसका वुज़ू या गुस्ल मे धोना फ़र्ज है, खाना पानी या सफ़रा की मूँह भर कै (उल्टी) आना,इस तरह सो जाना कि कि जिस्म के जोड़ ढीले पड़ जायें, बेहोश होना, जुनून होना, ग़शी होना, किसी चीज़ का इतना नशा होना कि चलने में पाँव लड़खड़ायें, रूकु और सजदे वाली नमाज़ मे इतनी ज़ोर से हंसना कि आस पास वाले सुनें, दुखती आँख से आँसू

बहना, इन तमाम बातों से वुज़ू टूट जाता है।

ग़ुस्ल (नहाने) का बयान
ग़ुस्ल के फ़राइज़

ग़ुस्ल में तीन फ़र्ज़ हैं.

(1) **कुल्ली करनाः** मूँह के हर गोशे होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाये, अकसर लोग ये जानते हैं कि थोड़ा सा पानी मूँह में लेकर उगल देने को कुल्ली कहते हैं अगर्चे ज़ुबान की जड़ और ह़ल्क़ के किनारे तक न पहुँचे, ऐसे ग़ुस्ल न होगा, बल्कि फ़र्ज़ है कि दाड़ी के पीछे गालों की तह में दाँतों की जड़ और खिड़कियों में ज़ुबान की हर करवट में ह़ल्क़ के किनारे तक पानी बहे।

(2) **नाक मे पानी डालनाः** यानि दोनों नथनों में जहाँ तक नर्म जगह है धुलना कि पानी को सूंघ कर ऊपर चढ़ाये बाल बराबर भी धुलने से न रह जाये, नहीं तो ग़ुस्ल नहीं होगा, अगर नाक के अन्दर रेंठ सूख गई है तो उसका छुड़ाना फ़र्ज़ है।

(3) **तमाम बदन पर पानी बहानाः** यानि सर के बालों से पाँवों के तलवों तक जिस्म के हर गोशे हर रोंगटे पर पानी बह जाना फ़र्ज़ है, अकसर लोग यह करते हैं कि सर पर पानी डालकर जिस्म पर हाथ फेर लेते हैं और समझते हैं कि ग़ुस्ल हो गया, हालांकि कुछ उज़्व (हिस्से) ऐसे हैं कि जब तक उनकी ख़ास़ तौर पर एह़ति़यात़ न की जाये तो नही धुलेंगें और ग़ुस्ल न होगा।

ग़ुस्ल करने का तरीक़ा

ग़ुस्ल करने का तरीक़ा यह है कि पहले ग़ुस्ल की नियत करके दोनों हाथ तीन बार धोये फिर इस्तिन्जा की जगह धोये उसके बाद बदन पर अगर कहीं निजासत हो तो उसे दूर करे फिर नमाज़ जैसा वुज़ू

करे मगर पाँव न धोये अगर चौकी या पथ्थर वग़ैरह ऊँची चीज़ पर नहाये तो पाँव भी धोले, उसके बाद बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़े फिर तीन बार दाहिने कन्धे पर पानी बहाये और फिर तीन बार बायें कन्धे पर पानी बहाये फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाये, तमाम बदन पर हाथ फेरे और मले फिर नहाने के बाद फौरन कपड़े पहन ले।

नमाज़ का बयान

नमाज़ हर आ़क़िल बालिग़ पर फ़र्ज़ है, इसकी फ़र्ज़ियत का इनकार करने वाला काफ़िर है और जो क़स्दन (जानबूझ कर) नमाज़ छोड़े अगर्चे एक ही वक़्त की वह फ़ासिक़ है और जो नमाज़ न पढ़ता हो क़ैद किया जाये यहाँ तक कि तौबा करे और नमाज़ पढने लगे।

नमाज़ की अहमियत और फ़ज़ीलत

क़ुर्आन मजीद और अह़ादीसे करीमा मे जगह जगह इसकी फ़जीलत और अहमियत बयान की गई है, अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है

" यह किताब परहेज़गारों को(के लिये) हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान लाते और नमाज़ क़ाइम रखते और हमने जो दिया उसमें से हमारी राह में ख़र्च करते हैं। " (पाराः1, रूकूः1)

और फ़रमाता है

" नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात दो और रूकू करने वालों के साथ रूकू करो।" (पाराः1, रूकूः5)

और फ़रमाता है

" तमाम नमाज़ों खुसूसन बीच वाली नमाज़ (अ़स्र) की मुहाफ़ज़त रखो और अल्लाह के ह़ज़ूर अदब से खड़े हो। "

(पाराः 2,रूकुः15)

नमाज़ का बिल्कुल छोड़ देना तो सख्त हौलनाक चीज़ है। उसे क़ज़ा

करके पढ़ने वालों के बारे में फ़रमाता है

" खराबी है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ से बेखबर है वक़्त गुज़ार कर पढ़ने उठते हैं " (पाराः30,रूकुः32)
जहन्नम में एक वादी है जिसकी सख़्ती से जहन्नम भी पनाह माँगता है उसका नाम वैल है जान बूझ कर नमाज़ कज़ा करने वाले उसके मुस्तहिक़ हैं।
और फ़रमाता है

" उनके बाद कुछ नाख़लफ़ पैदा हुये जिन्होंने नमाज़ें ज़ाये करदीं और नफ़सानी ख्वाहिशों की इत्तिबा की अन्क़रीब वह दौज़ख में ग़य्य का जंगल पायेंगें। " (पाराः16,रूकुः7)
ग़य्य जहन्नम में एक वादी है जिसकी गर्मी और गहराई सबसे ज़्यादा है उसमें एक कुआँ है जिसका नाम हबहब है जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है अल्लाह तआ़ला उस कुएँ को खोल देता है जिससे वह बदस्तूर भड़कने लगती है।
अहादीसे करीमा मे भी नमाज़ की अहमियत और नमाज़ न पढ़ने पर सख्त वईदें सुनाई गई हैं। उनमें से कुछ ह़दीसें यहाँ ज़िक्र की जा रही हैं

ह़दीसः हज़रत इब्ने उमर रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है इस बात की शहादत देना कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा मअ़बूद (पूजने के लाइक़) नहीं और मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस के ख़ास बन्दे और रसूल है और नमाज़ काइम करना और ज़कात देना और हज करना और माहे रमज़ान के रोज़े रखना । (बुखारी)
ह़दीसः हज़रत अबू हुरैरा रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया बताओ तो किसी के दरवाज़े पर नहर हो वह उसमें हर रोज़ पाँच बार नहाये क्या उसके बदन पर मैल रह जायेगा? अर्ज़ की न, फ़रमाया यही मिसाल पाँच नमाज़ों की है कि अल्लाह तआ़ला इसके सबब ख़ताओ़ को मिटा देता है। (बुख़ारी)

ह़दीसः हज़रत उमर रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि एक साहब ने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह ! इस्लाम में सबसे ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक महबूब क्या चीज़ है। फ़रमाया वक़्त में नमाज़ अदा करना और जिसने नमाज़ छोड़ दी उसका कोई दीन नहीं, नमाज़ दीन का सुतून है। (बैह़क़ी)

ह़दीसः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नमाज़ दीन का सुतून है जिसने इसे क़ाइम रखा उसने दीन को क़ाइम रखा और जिसने इसको छोड़ दिया उसने दीन को ढा दिया। (मुनियतुल मुसल्ली)

ह़दीसः फ़रमाने नबवी है कि हर चीज़ के लिये एक अलामत (पहचान) होती है ईमान की अलामत नमाज़ है। (मुनियतुल मुसल्ली)

ह़दीसः हज़रत अबू सईद रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी जहन्नम के दरवाज़े पर उसका नाम लिख दिया जाता है। (अबू नईम)

ह़दीसः हज़रत नौफ़ल इब्ने मुआ़विया रदि अल्लाहु अन्हु से मरवी कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि जिसकी नमाज़ फ़ौत हुई (छूट गई) गोया (तो ऐसा है कि)उसके अहल व माल जाते रहे। (बुखारी)

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ की छः शर्तें हैं

(1) **तहारतः** यानि नमाज़ी के बदन उसके कपड़े और नमाज़ पढ़ने की जगह का पाक होना।

(2) **सत्रे औरतः** यानि बदन का वह हिस्सा जिसका छुपाना फ़र्ज़ है उसको छुपाना।

(3) **इस्तिकबाले क़िब्लाः** यानि नमाज़ मे क़िब्ले की तरफ़ मूँह करना।

(4) **वक़्तः** यानि जिस वक़्त की नमाज़ पढ़ी जाये उस नमाज़ का वक़्त होना।

(5) **नियतः** नियत दिल के पक्के इरादे को कहते है, ज़ुबान से नियत करना मुस्तहब है।

(6) **तकबीरे तहरीमाः** यानि अल्लाहु अकबर कहकर नमाज़ शुरू करना।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि बा वुज़ू काबे की तरफ़ को मूँह करके दोनें पाँवों के पन्जों में चार उन्गल का फ़ासला करके खड़ा हो और दानों हाथ कानों तक ले जाये इस हाल में कि अंगूठे कान की लौ से छू जायें और उंगलियाँ न मिली हुये रखे और न खूब खोले हुये बल्कि अपनी हालत पर हों और हथेलियाँ काबे की तरफ़ को हों फिर नियत करके अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ नीचे लाकर नाफ़ के नीचे बाँध ले इस तरह कि दाहिनी हथेली की गद्दी बायीं कलाई के सिरे पर हो और बीच की तीन उंगलियाँ बायीं कलाई की पुश्त परऔर अंगूठा और छुंगलिया कलाई के अग़ल बग़ल हों और सना यानि

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَ تَبَارَكَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّكَ وَ لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

''सुब्हा न कल्लाहुम्मा वबि हमदि क वतबा र कसमु क वतआ़ला जददु क

वला इला ह ग़ैरुक''. पढ़े फिर तअव्वुज़ यानि
اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم पढ़े फिर तसमिया यानि
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़े, फिर सूरह फ़ातिहा (अल्हम्द शरीफ़)
पढ़े।अल्हम्द शरीफ़ यह है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ
الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ؕ

और ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कहे इसके बाद कोई सूरत या तीन आयतें पढ़े या एक आयत जो कि छोटी तीन आयतों के बराबर हो। अब अल्लाहु अकबर कहता हुआ रूकू में जाये और घुटनों को हाथ से पकड़े इस तरह कि हथेलियाँ घुटने पर हों और उंगलियाँ खूब फैली हों इस तरह नही कि सब उंगलियाँ एक तरफ़ हों और न इस तरह कि चार उंगलियाँ एक तरफ़ हों और एक तरफ़ सिर्फ़ अंगूठा। और पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो ऊँचा नीचा न हो और कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمُ ''सुब्हा न रब्बियल अ़ज़ीम'' पढ़े फिर سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَه ''समि अ़ल्लाहु लिमन हमिदह'' कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाये और अकेले नमाज़ पढ़ता हो तो इसके बाद اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ ''अल्लाहुम्मा रब्बना व लकल हम्द'' कहे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे में जाये इस तरह कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच मे नाक फिर पेशानी रखे इस तरह कि पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जमाये और बाज़ुओं को करवटों और पेट को रानों और रानों को पिन्डलियों

से जुदा रखे और दोनो पाँवों की सब उंगलियो के पेट किबला–रू जमे हों और हथेलियाँ बिछी हों और उंगलियाँ किबले को हों और कम से कम तीन बार سُبۡحَانَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی "सूबहा न रब्बियल अ़अ़ला" कहे फिर सर उठाये फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करके उसकी उंगलियाँ क़िबला रूख करे और बायाँ क़दम बिछा कर खूब सीधा बैठ जाये और हथेलियाँ बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखे फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सजदे में जाये और पहले की तरह सजदा करके फिर सर उठाये फिर हाथ को घुटने पर रखकर पंजो के बल खड़ा हो जाये और अब सिर्फ़ बिस्मिल्लाह पढ़ कर किरात शुरू करदे फिर पहले की तरह रूकू सजदा करके दाहिना क़दम खड़ा करके और बायाँ क़दम बिछा कर बैठ जाये और यह पढ़े:

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَ الصَّلَوٰۃُ وَالطَّیِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَیۡکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ وَ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ السَّلَامُ عَلَیۡنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصَّالِحِیۡنَ اَشۡھَدُ اَنۡ لَّا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ وَ اَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبۡدُہٗ وَ رَسُوۡلُـہٗ

"अत्तहि़य्यातु लिल्लाहि वस सलावातु वत तय्यिबातु अस्सलामु अ़लै क अय्युहन नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब रकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल लाहिस्सालिहीन अशहदु अल ला इला ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन न मुहम्मदन अबदुहू वरसूलुह".अब अगर दो से ज़्यादा रकअ़तें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और इसी तरह पढ़े मगर फ़र्ज़ों की इन रकअ़तों में सुरह फ़ातिहा (अल्हम्द शरीफ़) के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं। अब पिछला क़अ़दा जिसके बाद नमाज़ ख़त्म करेगा उसमें तशह्हुद (अत्तहिय्यात) के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़े। दुरूद शरीफ़ यह है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

''अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अ़ला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा सल्लै त अ़ला सय्यिदिना इब्राही म व अ़ला आलि सय्यिदिना इब्राही म इन न क हमीदुम मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन व अ़ला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन कमा बारक त अ़ला सय्यिदिना इब्राही म व अ़ला आलि सय्यिदिना इब्राही म इन न क हमीदुम मजीद''.

उसके बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

''अल्लाहुम्मा रब्बना आतिना फ़िद दुनया ह़सनतौं व फ़िल आख़िरति ह़सनतौं व क़िना अ़ज़ाबन नार''.

फिर दाहिने कन्धे की तरफ़ मूँह करके اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ ''अस्सलामु अ़लैयकुम व रहमतुल्लाह''. कहे फिर बायीं कन्धे की तरफ़ मूँह करके इसी तरह कहे।

यह तरीका इमाम या अकेले मर्द के पढ़ने का है, मुक़तदी इसमें की कुछ बातों में अलग है जैसे इमाम के पीछे सूरह फ़ातिहा या और कोई सुरत पढ़ना कि यह मुक़तदी को जाइज़ नहीं। इसी तरह औरतें भी कुछ बातों मे अलग हैं जैसे औरतें तकबीरे तहरीमा के वक़्त हाथ कानों तक न

ले जायें बल्कि सिर्फ़ कन्धों तक उठायें हाथ नाफ़ के नीचे न बाँधें बल्कि बायीं हथेली सीने पर रख कर उसकी पीठ पर दाहिनी हथेली रखें, रूकू में ज़्यादा न झुकें बल्कि सिर्फ़ इतना झुकें कि हाथ घुटनों तक पहुँच जायें, पीठ सीधी न करें और न घुटनों पर ज़ोर दें, सजदे में जायें तो बाजू करवटों से मिला दें और पेट रान से और रान पिन्डलियों से और पिन्डलियाँ ज़मीन से और कअ़दे में बायें कदम पर न बैठें बल्कि दोनो पाँव दाहिनी तरफ़ निकालदें और सुरीन पर बैठें।

नमाज़ के फ़राइज़

नमाज़ में सात फ़र्ज़ हैं

(1) **तकबीरे तहरीमाः** यानि अल्लाहु अकबर कहकर नमाज़ शुरू करना।

(2) **कियामः** यानि नमाज़ में खड़ा होना उसकी कम से कम हद यह है कि अगर हाथ फैलाये तो घुटनों तक न पहुँचें, इतनी देर खड़ा होना फ़र्ज़ है जितनी देर मे फ़र्ज़ की मिक़दार किरात की जा सके।

(3) **किरातः** यानि नमाज़ में कुरान शरीफ़ का इस तरह पढ़ना कि तमाम हुरूफ़ अपने मख़रज (जहाँ से हर्फ़ निकलता है उसे मख़रज कहते हैं) से सही तौर से अदा किये जायें कि हर हर्फ़ अपने ग़ैर से सही तौर पर मुमताज़ (जुदा) हो जाये।

(4) **रूकुः** यानि इतना झुकना कि हाथ बढ़ाये तो घुटनों तक पहुँच जायें यह रूकू का अदना (सबसे कम) दर्जा है रूकू का कामिल दर्जा यह है कि पीठ सीधी बिछा दे।

(5) **सुजूदः** यानि हर रकअ़त में दो सजदे करना इस तरह कि पेशानी, नाक, दोनों हाथ की हथेलियाँ, दोनों घुटने और दोनों पाँवों की उंगलियाँ और नाक की हड्डी ज़मीन से लग जायें। पेशानी का ज़मीन पर जमना

सजदे की हक़ीक़त है।

(6) **कअ़दए अख़ीराः** यानि आखिरी कअ़दा कि जिसके बाद सलाम फेरकर नमाज़ पूरी की जाती है।

(7) **खुरूजे बिसुनएहीः** यानि अपने इरादे से नमाज़ खत्म करना।

नमाज़ के वाजिबात

नमाज़ में यह चीज़ें वाजिब है। तकबीरे तहरीमा में लफ्ज़े अल्लाहु अकबर कहना,अल्हम्द पढ़ना उसकी हर एक आयत मुस्तक़िल वाजिब है उनमें एक आयत का छोड़ना बल्कि एक लफ्ज़ का छोड़ना भी वाजिब का छोड़ना है, सूरत मिलाना यानि एक छोटी सूरत या तीन छोटी आयतों का अल्हम्द शरीफ़ के बाद पढ़ना या एक या दो आयतें जो छोटी तीन आयतों के बराबर हों पढ़ना, सूरह फ़ातिहा का सूरत से पहले होना, क़िरात के बाद फ़ौरन रूकू करना, एक सजदे के बाद दूसरा सजदा करना, तादीले अरकान(इत्मिनान से अरकान अदा करना) यानि रूकू व सुजूद में व क़ियाम व जलसें में कम अज़ कम एक बार सुब्हानल्लाह कहने की मिक़दार ठहरना, क़ौमा यानि रूकू से सीधा खड़ा होना, जलसा यानि दानों सजदों के दरमियान सीधा बैठना, कअ़दए ऊला अगर्चे नमाज़ नफ्ल हो,दोनें कअ़दों में पूरी अत्तहिय्यात पढ़ना इसी तरह जितने कअ़दे करने पड़ें सब में पूरी अत्तहिय्यात वाजिब है, एक लफ़्ज़ का छोड़ना भी वाजिब का छोड़ना होगा, लफ़्ज़े अस्सलामु दो बार वाजिब अ़लैकुम वाजिब नहीं, वित्र में दुआ़ए कुनूत पढ़ना, तकबीरे कुनूत यानि दुआ़ऐ कुनूत से पहले तकबीर कहना, हर फ़र्ज़ व वाजिब का उसकी जगह पर होना, रूकू का हर रकअ़त में एक ही बार होना, यानि एक से ज़्यादा रूकू न करना, सुजूद का दो बार ही होना यानि दो से ज़्यादा सजदे न करना।

नमाज़ की सुन्नतें

नमाज़ में यह चीज़ें सुन्नत हैं. तकबीरे तहरीमा के लिये हाथ उठाना और हाथों की उंगलियाँ अपने हाल पर छोड़ना, तकबीर के वक़्त सर न झुकाना और हाथेलियों और उंगलियों के पेट का काबे की तरफ़ होना, तकबीर से पहले हाथ उठाना इसी तरह तकबीरे कुनूत व तकबीराते ईदैन में कानो तक हाथ ले जाने के बाद तकबीर कहना, औरत को सिर्फ़ काँधों तक हाथ उठाना, इमाम का अल्लाहु अकबर, समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह और सलाम बुलन्द आवाज़ से कहना, तकबीर के बाद हाथ लटकाए बग़ैर फ़ौरन बाँध लेना, सना, तअ़व्वुज़ और तसमिया पढ़ना और आमीन कहना और इन सबका आहिस्ता होना, पहले सना पढ़ना फिर तअ़व्वुज़ फिर तसमिया और हर एक के बाद दूसरे को फौरन पढ़ना, रूकू में तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمُ कहना और घुटनों को हाथों से पकड़ना और उंगलियाँ खूब खुली रखना, औरत को घुटने पर हाथ रखना, और उंगलियाँ खुली हुई न रखना, रूकू की हालत में पीठ खूब बिछी रखना, रूकू से उठने पर हाथ लटका हुआ छोड़ देना, रूकू से उठने में इमाम को سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَہ कहना और मुक़तदी को اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ कहना और अकेले पढ़ने वाले को दोनों कहना, सजदे के लिये और सजदे से उठने के लिये अल्लाहु अकबर कहना, सजदे में कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहना, सजदा करने के लिये पहले घुटना फिर हाथ फिर नाक फिर पेशानी ज़मीन पर रखना और सजदे से उठने के लिये पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ फिर घुटना ज़मीन से उठाना, सजदे में बाज़ु करवटों से और पेट रानों से अलग होना और कलाइयाँ ज़मीन पर न बिछाना, औरत का बाज़ू करवटों से, पेट रान से , रान पिन्डलियों से और पिन्डलियाँ

ज़मीन से मिला देना, दोनों सजदों के दरमियान बैठना और हाथों को रानों पर रखना, सजदों मे हाथों की उंगलियाँ काबे की तरफ़ होना और मिली हुई होना, पाँवों की दसों उंगलियों के पेट ज़मीन पर लगना, दूसरी रकअ़त के लिये पन्जों के बल घुटनों पर हाथ रखकर उठना, कअ़दें में बायाँ पाँव बिछा कर दोनों सुरीन उस पर रखकर बैठना, दाहिना क़दम खड़ा रख़ना, और दाहिने क़दम की उंगलियाँ क़िब्ला रूख होना, औरत को दोनों पाँवों दाहिनी जानिब निकाल कर बायीं सुरीन पर बैठना, दाहिना हाथ दाहिनी रान पर और बायाँ हाथ बायीं रान पर रखना और उंगलियों को अपनी हालत पर छोड़ना, शहादत पर इशारा करना, कअ़दए अख़ीरा में अत्तहिय्यात के बाद दरूद शरीफ़ और दुआ़ए मासूरह पढ़ना।

नमाज़ के मकरूहात

नमाज़ में यह चीज़ें मकरूह हैं. कपड़े बदन या दाढ़ी के साथ खेलना, कपड़ा समेटना जैसे सजदे मे जाते वक़्त आगे या पीछे से उठा लेना, कपडा लटकाना यानि सर या काँधे पर इस तरह डालना कि दोनों किनारे लटकते हों, किसी आस्तीन का आधी कलाई से ज़यादा चढ़ाना, दामन समेट कर नमाज़ पढ़ना, मर्द का जोड़ा

बाँधे हुये नमाज़ पढ़ना, उंगलियाँ चटकाना, उंगलियों की कैंची बाँधना, कमर पर हाथ रखना, आसमान की तरफ़ निगाह उठाना, मर्द का सजदे मे कलाइयों का बिछाना, किसी शख़्स के मूँह के सामने नमाज़ पढ़ना, कपड़े में इस तरह लिपट जाना कि हाथ भी बाहर न हों, पगड़ी इस तरह बाँधना कि बीच सर पर न हो, नाक और मूँह को छुपाना, जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना, तस्वीर का नमाज़ी के सर पर यानि छत पर होना या लटकी हुई होना या सजदे की जगह पर होना कि उस पर सजदा किया जाये, नमाज़ी के आगे या

दाहिने या बायें या पीछे तस्वीर का होना इस तरह कि लटकी हुई हो या दीवार वग़ैरह में मनक़ूश हो, उल्टा क़ुर्आन मजीद पढ़ना, किरात को रूकू में खत्म करना, इमाम से पहले मुक़्तदी का रूकू व सुजूद वग़ैरह में जाना या उससे पहले सर उठाना। यह तमाम बातें मकरूहे तहरीमी हैं।

वित्र का बयान

वित्र वाजिब है अगर भूल कर या जान बूझ कर न पढ़े तो क़ज़ा वाजिब है। वित्र की नमाज़ भी उसी तरह पढ़ी जाती है जिस तरह और नमाज़ें पढ़ी जाती हैं लेकिन वित्र की तीसरी रकअ़त में अल्हम्द और सूरत पढ़ने के बाद कानों तक दोनों हाथ ले जाये और अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ वापस लाये और नाफ के नीचे बाँध ले फिर

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُکَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِکَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْکَ
وَنُثْنِیْ عَلَيْکَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ
اللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَکَ نُصَلِّیْ وَنَسْجُدُوَاِلَيْکَ نَسْعٰی وَنَحْفِدُ
وَنَرْجُوْارَحْمَتَکَ وَنَخْشٰی عَذَابَکَ اِنَّ عَذَابَکَ بِالْكُفَّارِمُلْحِقٌ.

सजदए सहव का बयान

कभी नमाज़ मे भूल से कोई ख़ास़ ख़राबी पैदा हो जाती है उस खराबी को दूर करने के लिये क़अ़दए अख़ीरा में दो सजदे किये जाते हैं उनको सजदए सहव कहते हैं।

इन बातों से सजदा-ए-सह्व वाजिब हो जाता है

जो बातें नमाज़ में वाजिब हैं उनमें से किसी एक के भूल कर छूट जाने से सजदए सहव वाजिब होता है जैसे फ़र्ज़ की पहली या दूसरी रकअ़त में अल्हम्द या सूरत पढ़ना भूल गया या अल्हम्द से पहले सूरत पढ़ दी

तो इन सूरतों में सजदए सहव करना वाजिब होता है।

सजदए सहव का तरीका

सजदए सहव का तरीक़ा यह है कि आख़िरी क़अदे में अत्तहिय्यात वरसूलुहू तक पढ़ने के बाद सिर्फ़ दाहिनी जानिब सलाम फेर कर दो सजदे करे फिर अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ वग़ैरह पढ़ कर सलाम फेर दे।

मसअ़लाः– फ़र्ज़ छूट जाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है सजदए सहव से वह सही नहीं हो सकती बल्कि दोबारा पढ़ना पड़ेगी और सुन्नत व मुस्तहिब जैसे तसमिया,सना और तअ़व्वुज़ छूट जाने से सजदए सहव वाजिब नहीं होता बल्कि नमाज़ हो जाती है मगर दोबारा पढ़ना मुस्तहब (बेहतर) है।

मसअ़लाः– अगर किसी वाजिब को जान बूझ कर छोड़ दिया तो सजदए सहव से नमाज़ नहीं होगी बल्कि नमाज़ को दोबारा पढ़ना वाजिब है इसी तरह अगर भूल कर किसी वाजिब को छोड़ दिया और सजदए सहव न किया जब भी नमाज़ का दोबारा पढ़ना वाजिब है।

फ़ातिहा (नियाज़) का आसान तरीक़ा

फ़ातिहा का आसान तरीक़ा यह है कि पहले क़ुर्आन मजीद से जो कुछ भी याद हो पढ़ें, इसके बाद एक बार सूरा–ए काफ़िरून पढ़ेंः

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۝ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۝

इसके बाद तीन बार सूरा-ए इख़लास (कुल हुवल्लाह शरीफ़) पढ़ें:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ

इसके बाद एक बार सूरा-ए फ़लक़ पढ़ें:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ
وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۚ

इसके बाद एक बार सूरा-ए नास पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ
الْخَنَّاسِ ۙ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۚ

इसके बाद एक बार सूरा-ए फ़ातिहा (अल्हम्द शरीफ़) पढ़ें:

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۙ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۙ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ؕ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ؕ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ٪

इसके बाद एक बार सूरा-ए बक़रह (अलफ़ि लाम मीम) पढ़ें:

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الٓـمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَا رَیۡبَ ۚۖۛ فِیۡہِ ۚۛ ہُدًی لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡغَیۡبِ وَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ مِمَّا رَزَقۡنٰہُمۡ یُنۡفِقُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡمِنُوۡنَ بِمَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡکَ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ مِنۡ قَبۡلِکَ ۚ وَ بِالۡاٰخِرَۃِ ہُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِکَ عَلٰی ہُدًی مِّنۡ رَّبِّہِمۡ ٭ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۵﴾

इसके बाद यह पाँच आयतें पढ़ें:

﴿۱﴾ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲ البقرة:۱۶۳)

﴿۲﴾ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸ الاعراف:۵۶)

﴿۳﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷ الانبیآء:۱۰۷)

﴿۴﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۴۰)

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

इसके बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ें, फिर यह पढ़ें:

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾

इसके बाद इस तरह ईसाले सवाब करें:

ईसाले सवाब का तरीक़ा

या अल्लाह यह जो कुछ भी पढ़ा (अगर खाना वग़ैरह भी हो तो इतना और कहे कि यह खाना वग़ैरह) सब तेरी बारगाह में पेश है, तू इसका सवाब जो तू अपने करम से हमें अता फ़रमाये हमारी जानिब से हुज़ूर सल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की बारगाह में नज़्र है, क़ुबूल फ़रमा। हुज़ूर के वसीले से तमाम अम्बियाए किराम की बारगाह में नज़्र है,

कुबूल फ़रमा। तमाम सहाबा-ए किराम, अज़वाजे मुतह्हरात, शोहदाये इस्लाम की बारगाह में नज़्र है, कुबूल फ़रमा। इन तमाम का सवाब खुसूस बिल खुसूस (जिनकी नियाज़ हो उनका नाम लें) की रूह को पहुँचा। तमाम मोमिनीन, मोमिनात और मुसलिमीन व मुसलिमात की रूहों को इसका सवबा पहुँचा।

इसके बाद जो कुछ भी दुआ करना हो वह करके दुआ ख़त्म कर दीजिये।

नोटः- अगर किसी को यह सब सूरतें याद न हों तो पहले दुरूद शरीफ़ तीन बार पढें, इसके बाद एक बार सूरा-ए फ़ातिहा और तीन बार सूरा-ए इख़लास पढ़ें, इसके बाद तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर ईसाले सवाब करदें। इस तरह भी फ़ातिहा हो जायेगी।

मसनून दुआयें

(1) जब मस्जिद में दाखिल हों तो पहले दाहिना क़दम रखें और यह दुआ पढ़ें

" अल्लाहुम्मफ़ तह ली अबवा ब रहमतिक"

(2) जब मस्जिद से निकलें तो पहले बायाँ क़दम निकालें और यह दुआ पढ़ें

" अल्लाहम्मा इन्नी असअलु क मिन फ़द्‌लि क व रहमतिक "

(3) खाना खाने से पहले यह दुआ पढ़ें

" बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यदुर्रु मआ इस्मिही शैउन फ़िल अर्दि वला फ़िस्समाइ या ह़य्यु या क़य्यूम वहुवस समीउल अ़लीम "

(4) खाना खानें के बाद यह दुआ पढ़ें

" अल्हम्दु लिल्लाहिल लज़ी अत अ़ मना व सक़ाना वज अ़लना मिनल मुस्लिमीन"

(5) सोते वक़्त यह दुआ पढ़ें

" अल्लाहुम्मा बिइस्मि क अमूतु व अह़्या "

(6) जब नींद से बेदार हों तो यह दुआ़ पढ़ें

" अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह़्याना बअ़ द मा अमातना व इलैहिन नुशूर "

(7) जब किसी को मुसीबत में मुबतला देखें तो यह दुआ़ पढ़ें

" अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आ़फ़ानी मिम्मब तला क बिही व फ़द्द लनी अ़ला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क़ तफ़्ज़ीला "

(8) नया चाँद देख कर यह दुआ़ पढ़ें

" अल्लाहुम्मा अहिल्लहू अ़लैना बिल अम्नि वल ईमानि वस सलामति वल इस्लामि रब्बी वरब्बुकल्लाह "

(9) जब नया कपड़ा पहनें तो यह दुआ़ पढ़ें

" अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औ़रती व अ़ त जम्मलु बिही फ़ी ह़याती "

(10) जब किसी क़ौम या लशकर से जान व माल वग़ैरह का डर हो तो यह दुआ़ पढ़ें

" अल्लाहुम्मा इन्ना नजअ़लु क फी नुहूरिहिम व नऊ़ज़ु बि क मिन शुरूरिहिम "

(11) घर से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

" बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अ़लल्लाहि वला ह़ौ ल वला कुव्व त इल्ला बिल्लाह "

(12) शबे कद्र में यह दुआ़ कसरत से पढ़ें

" अल्लाहुम्मा इन्न क अ़फुव्वुन तुह़िब्बुल अ़फ़ व फ़अ़फु अ़न्नी "

(13) बैतुल ख़ला जाते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

" अल्लाहुम्मा इन्नी अऊ़ज़ु बि क मिनल ख़ुब्सि वल ख़बाइस "

(14) बैतुल ख़ला से निकलते वक़्त यह दुआ़ पढ़ें

" अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़ ह ब अ़न्निल अज़ा व आ़फ़ानी "